सन 1970 की मेरी काश्मीर-डायरी पर आधारित यह उपन्यास है। लगभग एक महीना गुलमर्ग और उसके आसपास के गांवों में लोक गीतों और लोक संगीत की तलाश में एक विदेशी शोध-छात्रा के साथ गुज़ारा था। **सलाखें** उन गुलाबी यादों की महक लिए है। सबसे पहले यह उपन्यास 1972 में **बर्फ के चेहरे : एन्टी लव स्टोरी** शीर्षक के साथ गुजराती में प्रकाशित हुआ था। **सलाखें** न्युडिज़म पर भी रोशनी डालता है, जो कई पाठकों के लिए तब नाक-भौं सिकुड़ने वाला विषय था लेकिन था नया। वैसे यह विषय आज भी अछूता है।

आबिद सुरती

जन्म : १९३५ राजुला (गुजरात)
शिक्षा : एस.एस.सी., जी.डी. आर्टस (ललित कला)
प्रकाशन : अब तक अस्सी पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें पचास उपन्यास, दस कहानी संकलन, सात नाटक, पचीस बच्चों की पुस्तकें, एक यात्रा-वृत्तांत, दो कविता संकलन, एक संस्मरण और कॉमिक्स। पचास साल से गुजराती तथा हिंदी की विभिन्न पत्रिकाओं और अखबारों में लेखन। उपन्यासों का कन्नड़, मलयालम, मराठी, उर्दू, पंजाबी, बंगाली और अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद। 'ढब्बूजी' व्यंग्य चित्रपट्टी निरंतर तीस साल तक साप्ताहिक 'धर्मयुग' में प्रकाशित।
दूरदर्शन, जी तथा अन्य चैनलों के लिए कथा, पटकथा, संवाद लेखन। अब तक देश-विदेशों में सोलह चित्र-प्रदर्शनियां आयोजित। फिल्म लेखक संघ, प्रेस क्लब (मुंबई) के सदस्य।
पुरस्कार : कहानी संकलन 'तीसरी आंख' को राष्ट्रीय पुरस्कार।

Email : aabidssurti@gmail.com
Web : www.aabidsurti.in
www.ddfmumbai.com

सलाखें

एंटी लव स्टोरी

आबिद सुरती

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर: 2021

© आबिद सुरती

ANTI LOVE PILL

सन 1970 की मेरी काश्मीर-डायरी पर आधारित उपन्यास है। लगभग एक महीना गुलमर्ग और उसके आसपास के गांवों में लोक गीतों और लोक संगीत की तलाश में एक विदेशी शोध-छात्रा के साथ गुज़ारा था। सलाखें उन तजुर्बों का निचोड़ है। सबसे पहले यह उपन्यास 1972 में **बर्फ के चेहरे:एंटी लव स्टोरी** शीर्षक के साथ प्रकाशित हुआ था।

सलाखें

न्युडिज़म पर भी रोशनी डालता है, जो कई पाठकों के लिए नाक- भौं सिकुड़ने वाला विषय था। लेकिन था नया। वैसे यह विषय आज भी अछूता है।

डॉ. नूतन प्रेमाणी ने गुजराती से इसका प्रथम रफ हिंदी ड्राफ्ट बनाया था। मैं अपने मित्र शोएब खान का आभारी हूँ कि जिसने पूर्ण धैर्य के साथ मेरे मार्गदर्शन में तीन और ड्राफ्ट बनाये। पांचवा और फाइनल अनुवाद जो आपके हाथ में है, वह मेरा है। और अब भी कोई ग़लती कहीं छूट गई हो तो इसके लिए जिम्मेदार भी मैं हूं।

आबिद सुरती

aabidssurti@gmail.com

1

मैं क़ैदी नहीं हूं। मैंने किसी की हत्या नहीं की है। मैंने किसी का लहू नहीं बहाया है। किसी की बेटी पर बलात्कार नहीं किया है। कोई बैंक नहीं लूटा है। किसी की जेब काटने जैसा मामूली जुर्म भी मैंने नहीं किया है। फिर भी पंद्रह दिनों की सजा मैंने भुगती है। पूरे पंद्रह दिन मैंने बंद दरवाज़े के पीछे काटे है। पंद्रह रातें मैं अपने बिस्तर पर तड़पता रहा हूं। मैंने दीवारों से सिर फोड़ा है, फूट-फूटकर रोया हूं। मेरी आँखें सुर्ख हो गई है। मेरे शरीर के कई हिस्सों में से पीड़ा उठ रही है। मेरी मांसपेशियों मे तनाव है। मैं भगवान को मन-ही-मन प्रार्थना करता हूं कि मेरी याददाश्त मिट जाय। वे सभी यादें सुलग के खाक हो जायें जिनमें मेरे दर्द की दास्तान गहराई तक उतर चुकी है।

यह इतना सरल नहीं है। हिंदी फिल्म के किसी हीरो की तरह मैं अपनी याददाश्त अपनी इच्छा से खो नहीं सकता। शायद इसीलिए मैं अपने शरीर को नाना प्रकार से पीड़ा दे रहा हूं। पिछले पंद्रह दिनों में मैंने अपने शरीर पर अनेक कष्टदायी प्रयोग किये है। हिमालय के किसी योगी की तरह अपने सारे वस्त्र उतारकर मैं बर्फीली ठंड में लेटा हूं। फिर भी भीतर की आग शांत नहीं हो रही है। मैंने अपने शरीर पर जगह-जगह आलपीन चुभाई है। फिर भी यादें मिटती नहीं। दीवारों से सिर फोड़ा है। फिर भी मैं वही अकीक़ हूं, जो कल था।

पंद्रह दिन और पंद्रह रातों की इस हौलनाक यात्रा के बाद एक बात का मुझे यकीन हो गया है। देह को कष्ट देने से यादें नहीं मिटती, क्योंकि यादों का सीधा रिश्ता